देश की पहली सार्वजनिक क्षेत्र की औषधि निर्माण इकाई जम्मू में स्थापित

आइए जेएंडके, बनाइए हर्बल दवाइयां, भेजिए देश-विदेश

बृजेश कुमार सिंह

जम्मू। हर्बल दवाइयों के क्षेत्र में बड़ी कंपनियों से मुकाबले के लिए केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर में बेहतर माहौल तैयार किया है। यहां सार्वजनिक क्षेत्र की पहली औषधि निर्माण इकाई सीएसआईआर की सहयोगी संस्था इंडियन इंस्टीट्यूट आफ इंटिग्रेटिव मेडिसिन (आईआईआईएम) में स्थापित की गई है। एक ही छत के नीचे हर्बल दवाइयों की प्रोसेसिंग से लेकर निर्माण तक संभव है।

टेबलेट, कैप्सूल और सिरप सभी कुछ बनाया जा सकता है। अब तक बड़ी कंपनियों केपास ही यह सुविधा होने से आयुर्वेदिक तथा हर्बल पौधों की खेती करने वाले किसानों एवं उद्यमियों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। आईआईआईएम में देशभर के किसी भी कोने से उद्यमी आकर दवाओं का निर्माण कर सकता है वह भी अपने नाम से। यहां दवा बनाने का फायदा यह होगा कि उसे क्वालिटी एश्योरेंस का सर्टिफिकेट मिलेगा जिससे वह देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी दवा भेज सकता है। संस्था के निदेशक डा. राम विश्वकर्मा ने बताया कि देशभर में इस प्रकार के पांच केंद्र खोलने का प्रस्ताव है। सबसे पहला केंद्र जम्मू में खुला है। संस्था को 2019 तक केलिए ड्रग एंड फूड कंट्रोल आर्गनाइजेशन की ओर से लाइसेंस भी मिल गया है।

टैबलेट, कैप्सूल, सीरप सब कुछ बन सकता है, देशभर में ऐसे पांच केंद्र खोलने का प्रस्ताव

15-15 हजार कैप्सूल-टैबलेट प्रति घंटा बनाने की क्षमता

संस्था में स्थापित इकाई की क्षमता 15-15 हजार टैबलेट तथा कैप्सूल प्रति घंटा बनाने की है। शुगर तथा नान शुगर कोटेड टैबलेट एवं कैप्सूल भी बनाए जा सकते हैं। इसे स्ट्रिप में या फिर खुले में ही पैक करने की भी सुविधा उपलब्ध है। इसी प्रकार 50 एमएल की 10 हजार बोटल सीरप बनाने की क्षमता है।

अमेरिका में प्लांट आधारित प्रोडक्ट बैन

मिलावटी तथा नकली हर्बल उत्पादों की आशंका में अमेरिका में प्लांट आधारित प्रोडक्ट पर बैन लगा दिया गया है। डा. राम विश्वकर्मा का मानना है कि क्वालिटी सर्टिफिकेट मिलने से उद्यमियों को अब अमेरिका में भी उत्पाद भेजने में सहूलियत रहेगी।